BA-II (H) Psychology
PsychoPathology

1) B.A-Part-II प्रश्न & Sub (PsychoPathology)

5. मनोलैंगिक विकास की अवस्थाओं की व्याख्या करें।

Ans→ फ्रायड ने मनोलैंगिक विकास का सिद्धान्त सबसे महत्व-पूर्ण सिद्धान्त है। लैंगिक क्रियाएँ कब में कौन प्रारम्भ कर देता है। सामान्य लोगों के लिए दो विषमलिंगी प्राणियों के जननेन्द्रियों के पारस्परिक सम्पर्क द्वारा की जाने वाली रतिक्रिया को लैंगिक क्रिया की संज्ञा दी जाती है। लैंगिक क्रियाएँ के बारे में आम ख्याल है कि प्राणी ऐसी क्रियाओं की शुरुआत किशोरावस्था तथा वयस्कावस्था से करता है। लेकिन फ्रायड ने यह स्पष्ट किया है कि लैंगिक क्रियाओं की शुरुआत व्यक्ति के शैशवकाल से ही होता है और उम्र बीतने के साथ-साथ उसका विकास ठीक उसी ढंग से होता है जैसे व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। फ्रायड ने यह स्पष्ट कह दिया है कि कभी-कभी किसी मनो-लैंगिक अवस्था की समस्याओं को बच्चा ठीक ढंग से समाधान नहीं कर पाता है। फलतः आगे की अवस्थाओं में भी उसका व्यवहार उसी अवस्था पर के समस्याओं का समाधान करने के लिए अक्सर किया जाता है।

मनोलैंगिक विकास की पाँच अवस्थाएँ है जो इस प्रकार है।

(1) मुखावस्था (Oral Stage):→

इस अवस्था का कामुकता क्षेत्र मुँह होता है। फलस्वरूप बच्चा मुँह द्वारा की जाने वाली सभी क्रियाओं जैसे चूसना, निगलना, जावड़ा से कोई चीज दबाना या जावड़ा मे दाँत निकल आने पर दाँत से दबाना आदि। इस अवस्थाओं को भी दो भागों मे बाँटा गया है।

(a) मुखवर्ती चूषण की अवस्था (Oral sucking stage) :→ मुखवर्ती चूषण की अवस्था जन्म से

Scanned by TapScanner

लेकर प्रथम 6 महीनों तक का होता है। सचमुच में यह अवस्था बच्चों के मुँह में दाँत निकलने से पहले की अवस्था होती है। सचमुच में यह अवस्था बच्चों के मुँह में दाँत निकलने से पहले की अवस्था होती है। इस अवस्था में बच्चा स्तन-पान द्वारा लैंगिक सुख प्राप्त करता है। उसे माँ के स्तन को चूसना अच्छा लगता है या जिन शिशुओं को बोतल का दुध पिलाया जाता है उसे रबर चूसना अच्छा लगता है इस तरह से उस अवस्था में चुसने की क्रिया की प्रधानता होती है इस तरह से शिशु इस अवस्था में अपने शरीर से आनन्द प्राप्त करता है लेकिन शिशु में कोई चेतना नही होती है।

(ii) मुखवर्ती दंतदर्शन की अवस्था :(Oral biting stage) :→

इस अवस्था की शुरूआत सामान्यतः 7वें महीनें से होती है जब शिशुओं में दाँत निकलने को आते हैं। इस अवस्था में प्रारम्भ होते ही शिशुओं को स्तनपान माँ बन्द कर देती है जिसे हम लोग दूध-छुड़ाई कहते हैं। दूध-छुड़ाई की प्रक्रिया प्रारम्भ होने से शिशुओं में कुण्ठा होती है जिससे उसे मानसिक आघात भी होता है इसके परिणाम स्वरूप स्वयं अपने ~~आहार~~ आहार के लिए स्वयं निर्देशित क्रियाएं करता है। इस अवस्था में शिशुओं के दाँत निकलते हैं। अतः अपनी आक्रमकता प्रवृत्तियों को दिखाने के लिए वह दंतदर्शन करना प्रारम्भ कर देता है।

(2) गुदावस्था (Anal stage) :→

मनोलैंगिक विकास का दूसरा स्तर गुदावस्था है जो करीब जीवन के पहला साल समाप्त होने पर प्रारम्भ होता है तथा दूसरा साल की अवधि समाप्त होने तक बनी होती है। दूसरे शब्दो मे यह अवस्था 2 से 3 साल तक के आयु के बीच होती है। इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र मुँह से हटकर शरीर के गुदा क्षेत्र मे

आ जाता है। फलस्वरूप बच्चे मल-मूत्र त्यागने से संबंधित के गुदा क्षेत्र में आ जाता है और इससे उसे आनन्द मिलता है। इस अवस्था में दो तरह की गुदा क्रियाएँ होती हैं।

गुदा-धारणात्मक अवस्था में शिशु मल-मूत्र को कुछ देर तक रोककर रखे रहते हैं। जिससे उनके आँत तथा मूत्राशय में एक तरह से हल्का तनाव उत्पन्न होता है जिससे उसे आनन्द का अनुभव होता है इसमें व्यक्तित्व के प्रभावों का पड़ने वाले दो अवस्थाएँ होती हैं।

(i) गुदा-निष्कासन की अवस्था (Anal Expulsion Stage) :→

गुदा-निष्कासन की अवस्था (Anal expulsion stage) :→

~~इस~~ इस अवस्था में शिशु को मल-मूत्र का परित्याग करने में लैंगिक सुख की प्राप्ति होती है क्योंकि ऐसा करने से उसका श्लेष्मल झिल्ली उत्तेजित हो जाता है जो उसके लैंगिक सुख में एक सक्रिय योगदान करता है। इसके अलावा माता-पिता द्वारा उचित स्थान एवं सही समय पर नियमित रूप से मल-मूत्र त्याग करने की प्रशिक्षण भी दी जाती है। इस प्रशिक्षण के दौरान माता-पिता द्वारा अपनायी गई मनोवृत्ति एवं विधियों का प्रभाव बच्चों पर व्यक्तित्व विकास पर काफी पड़ता है।

(ii) गुदा धारणात्मक अवस्था (Anal Retentive Stage) :—

इस अवस्था में शिशु को मल-मूत्र को कुछ देर रोककर रखने में लैंगिक आनन्द मिलता है। मल-मूत्र को कुछ देर तक

रोके रखने में शिशुओं के मूत्राशय एवं आंतें में एक हल्का सा तनाव उत्पन्न होता है जिससे उसे लैंगिक आनन्द मिलता है लेकिन वह इस तनाव से वह अधिक देर तक आनन्दित नहीं हो सकता है क्योंकि उसे मल-मूत्र का त्याग कुछ देर के बाद करना ही पड़ता है इससे शिशुओं में निराशा उत्पन्न होती हैं जो बाद में चलकर विशेष व्यक्तित्व शीलगुणों का सृजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(3.) लिंग प्रधानावस्था या शैश्नावस्था (Phallic stage):-

मनोलैंगिक विकास की तीसरी अवस्था शैश्नावस्था है जो चौथे से पाँचवें साल के दौरान उत्पन्न होती है। इस अवस्था में एक नया कामुकता क्षेत्र का विकास होता है। यह नया कामुकता क्षेत्र जननेन्द्रिय को शिशन कहा जाता है।

फ्रायड का कहना था कि जब लड़का में मातृ-मनोग्रन्थि का सफलतापूर्वक समाधान तथा लड़कों में पितृ-मनोग्रंथि का सफलतापूर्वक समाधान हो जाता है तो इसमें नैतिकता का विकास होता है। प्राय: इन मनोग्रन्थियों का समाधान दमन द्वारा तथा अपने माता-पिता के साथ आत्मीकरण करके किया जाता है।

जब इन दोनों मनोग्रन्थियों का ठीक ढंग से समाधान नहीं हो पाता है तो इसके परिणाम उसके व्यक्ति व्यक्तित्व पर सीधा पड़ता है। फ्रायड के अनुसार जो लड़का शैश्नावस्था पर आबद्ध होते हैं उनमें व्यस्क होने पर व्यक्तित्व के अन्य शीलगुणों में उतावलापन, शेखीबाजी, उच्चाकांक्षा आदि शीलगुण की प्रधानता होती है। जो लड़की शैश्नावस्था पर आबद्ध होती है। उनमें व्यस्क होने पर व्यक्तित्व के अन्य शीलगुणों में इश्कबाजी, सम्मोहकता आदि शील गुणों की

BA-II ...

5)

प्रधानता अधिक होती है।

(4) अव्यक्तावस्था या निलीनावस्था (Latency Stage) :→ मनोलैंगिक विकास की यह चौथी अवस्था है जो शैशवावस्था के बाद प्रारम्भ होता है। यह अवस्था 6 या 7 साल के उम्र से प्रारम्भ होकर लगभग 12 वर्ष की आयु तक रहती है। इस अवस्था में बच्चों में कोई नया कामुकता क्षेत्र नहीं विकसित होता है। तथा साथ ही साथ लैंगिक इच्छाएँ भी सुसुप्त रहती है। इस अवस्था में बच्चे अपनी लैंगिक इच्छाओं को अनैतिक समझकर उनका दमन कर देते हैं तथा अन्य बाहरी चीजों एवं वस्तुओं में अधिक रुचि दिखाना प्रारम्भ कर देते हैं। इस तरह से उनमें बहिर्मुखी अभिरुचि अधिक बढ़ जाती है। इस अवस्था में वे सामाजिक आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों को अच्छी तरह से समझने लगते हैं तथा उसी के अनुकूल व्यवहार करने में काफी बल मिलता है।

(5) जननेन्द्रियावस्था (Genital Stage) :→ मनोलैंगिक विकास की यह अन्तिम अवस्था है जो 13 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होकर निरन्तर चलता रहता है। इस अवस्था में किशोरावस्था तथा वयस्कावस्था दोनों ही सम्मिलित होते हैं। इस अवस्था का प्रारम्भ होते ही किशोरों एवं किशोरियों में अनेक तरह के शारीरिक परिवर्तन होते हैं तथा ग्रन्थीय विकास परिपक्व हो जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि पुरुषों में मूँछ, दाढ़ी तथा स्त्रियों में स्तन का विकास एवं मासिक धर्म की शुरुआत ...

जाती है। जननेन्द्रियावस्था के प्रारम्भ के कुछ वर्ष जो किशोरावस्था में वर्ष होते हैं में व्यक्तियो में अपने ही लिंग के व्यक्तियों के साथ रहने, उठने-बैठने एवं बातचीत करने की प्रवृत्ति अधिक तीव्र होती है

फ्रायड का यह कथन था कि प्रारंभिक किशोरावस्था में सभी व्यक्ति में समलिंग कामुकता की प्रवृत्ति होती है लेकिन धीरे-धीरे जैसे-व्यक्ति प्रारंभिक किशोरावस्था से निकलकर वयस्कावस्था में प्रवेश करता है तो उसकी समलिंगकामुकता प्रवृति कमने लगती है और उसमें विपरीत यौन के व्यक्तियो के प्रति आकर्षण बढ़ने लगते हैं और समलिंगकामुकता के जगह पर विषम लिंगकामुकता विकसित होने लगता है। २० वर्ष की अवस्था आ जाने पर विषमलिंगकामुकता के औपचारिक अभिव्यक्ति की अनुमति समाज देता है।

इन आलोचनाओ के फ्रायड का मनोलैंगिक विकास का सिद्धांत एवं महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं और आज भी कई मनोविश्लेषको जैसे एडलर (Adler) एवं युंग (Jung) जो फ्रायड के मनोविश्लेषण की विधियों से अपने आप को अलग कर दिये गये है।

Dr. Ramdhir Kumar
Dept of Psychology
Subject - (Hon & Sub) PsychoPathology
U.R.C. Rosera Samastipur
9570435959 . 9431852588

Scanned by TapScanner